शोध मंथन Vol. XI No.IV Oct.-Dec. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

श्री लंका की रामलीला के प्रकार

डॉ0 वजिरा गुणसेन,
वरिष्ठ प्राध्यापिका, श्री जयवर्धनपुर विश्वविद्यालय, श्री लंका
ईमेलः wajiragunasena@sjp.ac.lk

सारांश

रामायण हिंदू रघुवंश के राजा राम की गाथा है और भारत के इस महाकाव्य का श्री लंका से बहुत गहरा संबंध है। इसलिए भारत में ही नहीं श्री लंका में भी रामलीला का प्रस्तुतीकरण होता है। श्री लंका में सिंहली लोगों के द्वारा ही नहीं तमिल लोगों के द्वारा भी रामलीला दिखायी जाती हैं। रामलीला में राम की कहानी है। मुख्य रूप से वाल्मीकि के रामायण का प्रभाव सिंहली लोगों की रामलीला पर पड़ा है और कम्ब के रामायण का प्रभाव तमिल लोगों की रामलीला पर। श्री लंका की रामलीला मुख्य रूप से दो प्रकार की है। वे हैं, तमिल लोगों की रामलीला और सिंहली लोगों की रामलीला। तमिल की रामलीला के चार प्रकार हैं, –कुत्तू की रामलीला, बैले की रामलीला, नृत्य नाटिका की रामलीला और तमिल नाडगम की रामलीला। सिंहली की रामलीला भी पांच प्रकार की है। वे हैं, नाडगम की रामलीला, नूर्ति की रामलीला, आधुनिक रंगमंच की रामलीला, बैले की रामलीला और जहुटा की रामलीला। सर्वप्रथम सिंहली क्षेत्रों में रामलीला की शुरुआत नाडगम से हुई थी। लेकिन वास्तव में रामायण से संबंधित नूर्ति के द्वारा ही श्री लंका में रामलीला का निरूपण हुआ है। पर श्री लंका में अधिकतर रामलीलाओं द्वारा रावण की वीरता ही दिखायी जाती है। कई रामलीलाओं में सीता और रावण का प्रेम और कई रामलीलाओं में सीता के प्रति रावण के हृदय में उत्पन्न पवित्र प्रेम आदि की चर्चा की गयी है।

मुख्य शब्दः *रामायण, रामलीला, राम, सीता, रावण, श्री लंका, भारत*

प्रस्तावना

रामायण हिंदू रघुवंश के राजा राम की गाथा है और भारत के इस महा काव्य का श्री लंका से बहुत गहरा संबंध है। इसलिए भारत में ही नहीं श्री लंका में भी रामलीला का प्रस्तुतीकरण होता है। श्री लंका में सिंहली लोगों के द्वारा ही नहीं तमिल लोगों के द्वारा भी रामलीला दिखायी जाती हैं। रामलीला में राम की कहानी है। मुख्य रूप से वाल्मीकि के रामायण का प्रभाव सिंहली लोगों की रामलीला पर पड़ा है और कम्ब के रामायण का प्रभाव तमिल लोगों की रामलीला पर। इनके अतिरिक्त सिंहली लोक कथाओं का प्रभाव भी हम सिंहली रामलीला में देख सकते हैं। श्री लंका की रामलीला मुख्य रूप से दो प्रकार की है,

1.तमिल निवासी रामलीला
2.सिंहली की रामलीला

➢तमिल की रामलीला के चार प्रकार हैं,

1.कुत्तू की रामलीला
2.बैले की रामलीला
3.नृत्य नाटिका की रामलीला
4.तमिल नाडगम की रामलीला

➢सिंहली की रामलीला भी पांच प्रकार की है। वे हैं,

1.नाडगम की रामलीला
2.नूर्ति की रामलीला
3.आधुनिक रंगमंच की रामलीला
4.बैले की रामलीला
5.जहुटा की रामलीला

श्री लंका की रामलीला

यहाँ हमारा संबंध सिंहली राम लीला के अंतर्गत नाडगम की रामलीला, नूर्ति की रामलीला, आधुनिक रंगमंच की रामलीला, बैले की रामलीला, नृत्यनाटिका की रामलीला, और जहुटा की रामलीला से है। सर्वप्रथम हम नाडगम की रामलीला की चर्चा करेंगे।

सिंहली नाडगम की रामलीला

सर्वप्रथम सिंहली क्षेत्रों में रामलीला की शुरुआत नाडगम से हुई थी। 18वीं शताब्दी में नाडगम श्री लंका के पश्चिमी और दक्षिणी तटीय क्षेत्रों में बहुत लोकप्रिय हो गया। नाडगम सिंहली लोगों के मध्य अत्यंत प्रचलित हो गया। लेकिन नाडगम में रामलीला का अधिक प्रचलन नहीं है। क्योंकि नाडगम का प्रचलन ईसाई कथाओं के प्रस्तुतीकरण के लिए ईसाई भक्तों के बीच हुआ था। लेकिन वे हिंदू धर्म के मानने वाले थे। इसलिए नाडगम पर हिंदू और ईसाई दोनों धर्मों की कथाओं का प्रभाव पड़ा था। पर बहुधा उनपर ईसाई कहानियों का प्रभाव ही देख सकते हैं।

अधिकतर श्री लंका के पूरब प्रदेशों में रामलीला के नाडगम दिखाये जाते थे। पर आजकल थोड़ा कम होता जा रहा है। इस प्रदेश में अप्रैल से सितंबर तक मंदिरों में सात आठ दिनों तक विविध त्यौहार मनाये जाते है। तब उन्ही अवसरों में मंदिरों में नाडगम दिखाये जाते हैं। इनमें रामायण और महाभारत से संबंधित कथाओं का प्रदर्शन किया जाता है। लेकिन नाडगम की रामलीला बहुत कम है। बहुधा कुत्तू के द्वारा ही रामलीला का अभिनय किया जाता है।

सिंहली नूर्ति की रामलीला

नाडगम की रचना समाज से दूर होती जा रही है। उसकी जगह एक नयी शैली ने ले ली। जिसे नूर्ति के नाम से जाना जाता है। इसके द्वारा रामलीला दिखायी जाने लगी। रामलीला की दृष्टि से नूर्ति का उल्लेख उच्चकोटि में रखा जाना चाहिए। नूर्ति एक विचित्र रंगमंच की नाट्य कला है। जिसका आगमन 18वीं शताब्दी में भारत से आये हुए बलिवाला प्रमुख एक फ़ारसी के नाट्य दल से हुआ। इसे सिंहली प्रेक्षकों ने बड़े प्यार से गले लगा लिया। यह एक ऐसी नाट्य शैली थी जो संस्कृत नाटक, ऑपेरा और फारसी नाटकों के मिश्रण से बनी हुई थी। इसका संगीत अत्यंत मधुर था। इन फारसी नाटकों का अनुकरण करते हुए पहली सिंहली नूर्ति के रूप में

रामायण का निर्माण किया गया। जिसकी रचना जोन द सिल्वा ने की थी। उस रामायण में 64 गाने थे। उन सब पर उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रभाव खूब पड़ा था। वैसे भी पहले से ही रामायण के संबंध में सिंहली लोगों में अच्छा ज्ञान था। इसलिए सिल्वा जी ने इसके बाद भी रामायण से संबंधित ही नूर्तियों की रचना की। उनमें सीताहरण, अगिनिगत चरितम् रामायण, और उत्तर राम चरितय आदि उल्लेखनीय हैं। उन सबमें रामलीला देख सकते हैं।

वैसे भी अधिकतर नूर्तियों का कथानक ऐतिहासिक या पौराणिक है। उनके द्वारा अधिकतर जातक कथाएँ, महावंश की कथाएँ, महाभारत और रामायण की कथाएँ ही दिखायी गयी हैं। उस समय नूर्ति रचयिताओं का उद्देश्य समाज को सुधारना था। इसी कारण वे लोग रामायण के आधार पर नूर्तियों की रचना करने लगे। क्योंकि रामलीला नाटकों से मानव के उत्तम व्यवहारों को जगाया जाता था। जोन द सिल्वा ने रामलीलाओं सहित अपनी नूर्तियों से दाम्पत्य प्रेम, पतिव्रता, सेवक सेव्य संबंधता, भाईचारा, पितृ प्रेम, राजा का कर्तव्य, नारी की दशा आदि सभी उत्तम भावनाओं का पाठ सिखाया था। अंत में टवर होल जैसी बड़ी बड़ी रंगशालाओं का भी निर्माण करते हुए रामलीला सहित नूर्तियों का प्रदर्शन होने लगा। और आज भी लोग रामायण, विष्णु अवतार, उत्तर राम चरितम्, महा रामायण, गिनिगत रामायण, सीताहरणम्, रामचन्द्र, उत्तर रामायण आदि नूर्तियों के द्वारा रामलीलाएँ देखते हैं।

नूर्ति के माध्यम से दर्शायी जाने वाली रामलीलाओं में संस्कृत नाटकों की विशेषताएँ देख सकते हैं। संस्कृत नाटकों में कथा वस्तु, नेता, और रस आदि तत्वों का प्रमुख स्थान दिया जाता है। उसी के समान सिंहली नूर्ति की रामलीलाओं में भी रस, पात्र और कथा वस्तु का ध्यान दिया गया है। कथा वस्तु के अनुकूल पात्रों को रखा गया है और पात्रानूकल भाषा का प्रयोग किया गया है। और खास तौर पर कोई न कोई रस प्रबल रूप से दर्शकों तक पहुंचाने का प्रयास किया गया है।

जहुटी की रामलीला

सिंहली जन समाज में जहुटा नामक एक नाट्य शैली भी है। आज भी गाँवों में कभी कभी जहुटा नाटकों का अभिनय किया जाता है। इसका प्रदर्शन कभी कभी बौद्ध मंदिरों के आँगनों में और कभी कभी गाँवों के त्यौहारों में किया जाता है। इन नाटकों के द्वारा भी रामलीला दिखायी जाती है। रामायण से संबंधित मज़ेदार नाटक जहुटा के द्वारा दिखाया जाता है। वास्तव में यह कोई शास्त्रीय नाटक विधा नहीं है। यह एक लोक नाटक विशेष है, जिसका उद्देश्य है, केवल आम लोगों का मनोरंजन। ऐसा भी कह सकते हैं कि यह एक प्रकार से संवाद सहित गीति नाट्य विशेष जैसा है। पर ये नाटक विशेष अब सिंहली समाज से दूर होता चला जा रहा है।

बैले की रामलीला

श्री लंका में बैले का आरंभ महान कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की नृत्य नाटिका से हुआ। 1931ई. में रवीन्द्रनाथ टैगोर के द्वारा कुस जातक कथा के आधार पर सापमोचन नामक एक नृत्य नाटिका की गयी। इसके तीन साल बाद वह नृत्य नाटिका दल ठाकुर जी की बेटी और 34 कलाकारों के साथ श्री लंका आ गये। उन लोगों नें यहां भी सापमोचन का रंग मंचन किया था। और इससे ठाकुर जी और श्री लांकिक कलाकारों के बीच मित्रता हो गयी। फलस्वरूप होरण प्रदेश में श्रीपाली कला निकेतन का आरंभ हुआ। और श्री लंका के कलाकर शांति निकेतन जाकर पढ़ाई करके भी यहां आये। ये सब लोग मिलकर अंत में सीताहरण नामक नृत्य नाटिका की रचना

की और मंचन भी किया। इसके निदेशक शांति देवघोष थे। यह श्री लंका की पहली नृत्य नाटिका बन गयी। यह वाल्मीकि रामायण पर आधारित थी और अभिनय से ज़्यादा गीत ज़्यादा थे। और इसकी धुन पर वंग संगीत का बहुत प्रभाव था।

फिर 1940 ई में राम सीता बैले की रचना हुई। इसमें गीत बहुत कम थे अंग चलन और उत्तर भारतीय शास्त्रीय नृत्य की मुद्राएँ और भाव प्रकाशन बहुत देख सकते थे। इसके रचनाकार चित्रसेन थे, जिन्हें सिंहली बैले के पिता के नाम से जाना जाता है। उनके राम सीता बैले पर पाश्चात्य बैले का और ठाकुर जी की नृत्य नाटिका का प्रभाव एक समान रूप से पड़ा था। राम सीता बैले में राम और सीता के दाम्पत्य प्रेम का सुंदर वर्णन है। मर्यादोत्तम, कर्तव्य परायण श्री राम का चरित्र एक आदर्श राजा, पति और पुत्र के रूप में वर्णित है। और पति पत्नी की विरह वेदना का वर्णन भी है। और राम के तेजस्वी स्वभाव, सत्य, सदाचार का और उनकी वीरता का निरूपण चित्रसेन जी ने उडरट और पहतरट नृत्यों के द्वारा किया है। और सीता का लास्य स्वभाव भी नृत्यों के द्वारा दिखाया गया है। इसके अनुसार हम यह कह सकते हैं कि श्री लंका में बैले का आरंभ भी रामलीला पर आधारित है। चित्रसेन द्वारा 1941ई. में रचित दूसरी बैले की रामलीला रावण है। रावण बैले ने चित्रसेन सिंहली नृत्य परंपरा को एक नया आयाम दे दिया। उसमें उडरट और पहतरट नृत्यों का प्रयोग किया गया था। स्वतंत्रता मिलने के बाद फिर सिंहली जाति का अभिमान जागृत करने के लिए रावण का प्रयोग किया गया था। रावण का शौर्य दिखाना रावण बैले का मुख्य उद्देश्य है। रावण हर वक्त अपनी बहन को न्याय दिलाने की कोशिश करते हैं। इससे रावण के मन की एकाग्रता नष्ट हो जाती है और व्याकुल होकर वे सीता का अपहरण कर लेते हैं। इस प्रकार इस बैले के द्वारा चित्रसेन ने रावण के मन की चंचलता का भी वर्णन किया है। और रावण और राम का युद्ध इस बैले की चरमसीमा है। रावण, हनुमान, सुग्रीव, लक्ष्मण, राम, सीता, शूर्पणखा, कुंभकरण, आदि सभी पात्र इसमें शामिल हैं।

रावण बैले के बाद रामलीला के और एक मुद्रानाटक के रूप में जानकी नामक बैले की रचना हुई, जिसका रचनाकार वीरसेन गुणतिलक थे। इसके बाद रचित राम रावण का मुद्रा नाटक भी रामायण पर आधारित मुद्रा नाटक है। इसके निदेशक सुनेत गोकुल थे। फिर 2000 में रविबंधु विद्यापति के द्वारा भी रामायण नामक मुद्रा नाटक की रचना की गयी। इसके द्वारा रविबंधु जी ने यह दिखाया है कि रावण के मरते वक्त राम के हृदय में उनके प्रति कितनी वेदना उत्पन्न हुई थी। यही इस नाटक की विशेषता भी है। क्योंकि रावण के अंतिम समय में राम रावण को नमस्कार करते हैं।

इस प्रकार सिंहली और तमिल दोनों भाषाओं में बैले या नृत्य नाटिका होती है। उनके द्वारा भी रामलीला दिखायी जाती है। सिंहली समाज की नृत्य नाटिका की रामलीला का स्वरूप अब थोड़ा सा बदल गया है। क्योंकि इसमें भारतीय नृत्य शैली की जगह अब सिंहली परंपरा की नृत्य शैलियों का प्रयोग होने लगा है। पहतरट, उडरट और सबरगमु आदि सिंहली नृत्य शैलियों के और विविध शांतिकर्मों के अनुसार आजकल की बैले नाटकों की रचना जा रही है। इतना ही नहीं उनके संगीत का निर्माण भी श्री लांकिक लोक संगीत के अनुकूल हो रहा है। इन बैले की रामलीलाओं में रावण का चरित्र प्रमुख है। सिंहली बैले के प्रथम प्रस्तुतीकरण का आयोजन श्री लंका के कोलंबों विश्वविद्यालय के वैद्य संकाय के द्वारा किया गया है। इसका अभिनय भी इसी विश्वविद्यालय के छात्रों ने ही किया था। इसकी पटकथा के लेखक भद्रजी

महिन्द जयतिलक जी थे। उस बैले का नाम था, 'रावण नोकियू कतापुवत'। इसमें राम को लिए प्रमुखता दी गयी है। Ravana, The legend of untold- अर्थात रावण की नहीं कही गयी बात है। श्री लंका में इससे पहले रावण से संबंधित अन्य बैले की रामलीलाओं में रावण की दुष्टता का ही वर्णन किया गया है। क्योंकि वे सब वाल्मीकि के रामायण्ण पर आधारित रचनाएं हैं। लेकिन इसमें भद्रजी ने रावण से संबंधित सिंहली लोक कथाओं के आधार पर उसकी वीरता और अच्छाई दिखायी है। इसमें दिखाया गया है कि रावण ने सीता को अपनी पुत्री के समान माना है। पर सीताहरण इसलिए करता है कि लक्ष्मण आकर उसकी बहन शूर्पणखा से क्षमा माँगे। इस प्रकार जो लोग श्री लंका में आज भी हैं, जो रावण को अत्यंत भक्तायदर से पूजते हैं। वे लोग उनका गुण गाते हुए इस प्रकार के बैले का निर्माण करते हैं। उनको भी एक प्रकार की रामलीला कह सकते हैं।

सिंहली आधुनिक रंगमंच की रामलीला

सिंहली आधुनिक नाटकों की शुरुआत एदिरिवीर सरच्चंद्र जी के द्वारा हुई। उसके मनमे, सिंहबाहु आदि नाटकों के बाद लगातार रामायण से संबंधित नाटकों की रचना होने लगी। वे इस प्रकार हैं

1.अरिसेन अहुबुदु का सक्विति रावण 2.बर्टी गलहिटियाव का रावण 3.अकिल सपुमल का रावण आदरये हुस्म लगँ 4.प्रेमरंजित तिलकरत्न का सेरदे सीता 5.जयसेकर अपोन्सु का राम सीता कतावक 6.नामल वीरमुनि का रावण सीता अभिलाशय 7.चन्द्रसिरि विक्रमसूरिय का सीता रावण

ये सभी नाटक रामलीला है। पर इन सबका मुख्य उद्देश्य रावण की वीरता दिखाना है। कई रामलीलाओं में सीता और रावण का प्रेम और कई रामलीलाओं में सीता के प्रति रावण के हृदय में उत्पन्न पवित्र प्रेम आदि की चर्चा की गयी है।

संदर्भ ग्रंथ

1.किसनलाल, शर्मा (2014) रावण संहिता, मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली।
2.टीकाकार श्री ज्वालाप्रसाद जी, (2016) रामायण, रूपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन, वाराणसी।
3.आरियरत्न, सुनिल (2008) जोन द सिल्वा नूर्ति नाट्य एकतुव, भाग 6, गोडगे पब्लिकेशन, कोलंबो।
4.धर्मकीर्ति रंजित, (2013) नाट्य प्रवेश, कतृ प्रकाशन
5.दिसानायक, विमल (2009) जोन द सिल्वा हा सिंहली नाट्य, टवर होल फउनडेशन, श्री लंका।
6.हपुआरच्चि, डी.वी (1981) सिंहली नाट्य इतिहासय 1860–1911, लेक हाउस प्रकाशन, दिल्ली।
7.जयतिलक, भद्रजी महेंद्र (2018) रावण नोकी पुवत. अ बेले ओपेरा, सरसवि प्रकाशन, नुगेगोड़
8.ओबेसेकर, मेरेन्डो (2007) रावण पुवत, समन्ति प्रकाशन
9.ओबेसेकर, मेरेन्डो (2013) श्री लंकावे रावण अधिराज्य, समन्ति प्रकाशन।
10.सेनेविरत्न, आरियदास (2012) लंका रावण राजधानिय, समन्ति प्रकाशन।